डॉ. जेम्स एस. स्पीगल, ईसाई नैतिकता, सत्र 11, गर्भपात, भाग 2

© 2024 जिम स्पीगल और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. जेम्स एस. स्पीगल द्वारा ईसाई नैतिकता पर दिए गए उनके व्याख्यान हैं। यह सत्र 11, गर्भपात, भाग 2 है।

ठीक है, कुछ प्रमुख प्रो-चॉइस तर्कों को देखने के बाद, आइए प्रो-लाइफ स्थिति के लिए कुछ तर्कों पर नज़र डालें। हम इनमें से दो पर नज़र डालेंगे, एक डॉन मार्किस नामक दार्शनिक का और दूसरा अलेक्जेंडर प्राउस्ट नामक दार्शनिक का।

इसलिए डॉन मार्किस ने कई साल पहले एक पेपर लिखा था जिसमें उन्होंने तर्क दिया था कि गर्भपात की बहस पर अपने विचारों को स्पष्ट करने के लिए, हमें हत्या के गलत होने का उचित विवरण चाहिए। ऐसा क्या है जो गलत होने पर हत्या को गलत बनाता है? इसलिए, वह यहाँ कई संभावनाओं पर विचार करता है। क्या हत्या गलत है जब यह गलत है क्योंकि यह क्रूरता करती है? उसका जवाब है नहीं क्योंकि आप बहुत ही गैर-क्रूर, यहाँ तक कि सौम्य तरीकों से भी गलत तरीके से हत्या कर सकते हैं।

क्या इसलिए हत्या करना गलत है क्योंकि पीड़ित की याद आएगी? क्या इससे दूसरे लोगों को नुकसान होगा क्योंकि वे उस व्यक्ति से प्यार करते हैं जिसे उनसे दूर कर दिया गया है? नहीं। हत्या गलत है, भले ही पीड़ित की याद न आए, भले ही इससे किसी और को चोट न पहुंचे। हत्या को गलत इसलिए माना जाता है क्योंकि इससे किसी व्यक्ति का कीमती भविष्य छिन जाता है।

वह मार्किस को उद्धृत करते हुए कहते हैं कि किसी व्यक्ति की जान जाने से वह उन सभी अनुभवों, गतिविधियों, परियोजनाओं और आनंदों से वंचित हो जाता है जो अन्यथा उसके भविष्य का निर्माण करते। इसलिए, किसी की हत्या करना गलत है क्योंकि हत्या से पीड़ित को सबसे बड़ा संभावित नुकसान होता है। इसलिए यही वह बात है जो हत्या को गलत बनाती है जब वह गलत होती है।

यह पीड़ित को एक मूल्यवान भविष्य से वंचित करता है। इसलिए, जब हत्या करना गलत है तो हत्या को गलत मानने के बजाय, इस विचार के साथ, मार्किस इसके निहितार्थों पर विचार करते हैं। एक यह है कि केवल जैविक रूप से मानव को मारना ही गलत नहीं है।

यह जानवरों को मारने की गलती को भी स्वीकार करता है। जानवरों का भी संभावित रूप से मूल्यवान भविष्य होता है। और अगर आप किसी जानवर को मारते हैं, भले ही वह किसी इंसान को मारने के समान स्तर का न हो, तो भी यह प्रथम दृष्टया गलत है, कम से कम संभावित रूप से, क्योंकि उस जानवर का भविष्य छिन लिया गया है।

साथ ही, उनका दृष्टिकोण यह नहीं दर्शाता है कि सक्रिय इच्छामृत्यु हमेशा गलत होती है। यदि कोई व्यक्ति किसी घातक स्थिति में है और वह वैसे भी अपने जीवन के अंत के करीब पहुंच रहा है, जब उसकी मृत्यु इच्छामृत्यु या चिकित्सक-सहायता प्राप्त आत्महत्या के माध्यम से शीघ्रता से की जाती है, तो आपने उसका कोई मूल्यवान भविष्य नहीं छीना है; आपने उसका ऐसा भविष्य छीन लिया है जो संभवतः अत्यधिक पीड़ा से भरा होगा। यह उनके दृष्टिकोण का निहितार्थ होगा, या हत्या के गलत होने की इस समझ का, कम से कम अपने आप में तो यही समझा जा सकता है।

हम इच्छामृत्यु के बारे में अलग से बात करेंगे। लेकिन उनका दृष्टिकोण बच्चों और शिशुओं तथा भ्रूणों की हत्या के गलत होने के बारे में भी बताता है।

ध्यान दें कि, उनके विचार में, भ्रूण के व्यक्तित्व की धारणा पर कोई ध्यान नहीं दिया गया है। यह मार्क्स के तर्क का एक महत्वपूर्ण पहलू है। वह भ्रूण के व्यक्तित्व की अपील नहीं करता है।

हम इस बात को चर्चा से पूरी तरह से नकार सकते हैं, भले ही आप यह मान लें कि भ्रूण एक व्यक्ति नहीं है। उनके तर्क में यहाँ कुछ जीवन समर्थक निहितार्थ हैं, यहाँ तक कि उस बिंदु को स्वीकार करते हुए भी। उनका विवरण गर्भनिरोधक की नैतिक अनुमति के लिए भी अनुमति देता है।

क्यों? क्योंकि गर्भनिरोधकों के मामले में, कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जो अपने बहुमूल्य भविष्य से वंचित हो। किसी भी व्यक्तिगत शुक्राणु कोशिका का भविष्य शुक्राणु कोशिका के रूप में मूल्यवान नहीं होता। किसी भी व्यक्तिगत डिंब का अकेले डिंब के रूप में बहुमूल्य भविष्य नहीं होता।

और हम यह नहीं कह सकते कि गर्भनिरोध में शुक्राणु और अंडाणु का कोई विशेष संयोजन मूल्यवान भविष्य से वंचित है क्योंकि उन्हें अभी तक संयोजित नहीं किया गया है। इसलिए, उनका दृष्टिकोण गर्भनिरोध की नैतिक अनुमति की अनुमति देता है। मार्क्स के तर्क के कुछ आलोचक तर्क देते हैं कि एक वयस्क और एक भ्रूण एक ही इकाई नहीं हैं।

तो, मैं बहुत अलग हूँ; आप भ्रूण या युग्मनज, भ्रूण से बहुत अलग हैं, और कुछ लोग आग्रह करते हैं कि यह बिंदु किसी तरह मार्क्स के तर्क के खिलाफ है। हालांकि, जवाब में वह कहते हैं कि तथ्य यह है कि वे एक ही व्यक्ति या इकाई नहीं हैं, यह साबित नहीं करता है कि वे एक ही जीव नहीं हैं। इसलिए, भले ही हम भ्रूण और नवजात शिशु या बच्चे के बीच विकास की प्रक्रिया के माध्यम से एक व्यक्ति बन जाते हैं, भले ही व्यक्तित्व बाद में उभरता हो, यह अभी भी एक ही जीव है।

मैं एक ही जीव हूँ, बस इस जीव के इतिहास में अलग-अलग बिंदुओं पर, जैसे मैं तब था जब मैं एक भ्रूण था। दरअसल, अलेक्जेंडर प्राउस्ट का तर्क उस विचार को गहराई से विकसित करता है, यह विचार कि मैं एक बार एक भ्रूण था, लेकिन हम आगे इस पर चर्चा करेंगे।

मार्किस के तर्क की एक और आलोचना यह है कि यह एक महिला की स्वायत्तता, अपने शरीर को नियंत्रित करने के अधिकार को पर्याप्त महत्व नहीं देता है। इस पर मार्किस का जवाब है कि इसका वास्तव में उनके तर्क से कोई लेना-देना नहीं है। उनका निष्कर्ष इस बात को स्वीकार कर सकता है।

उनका निष्कर्ष यह है कि गर्भपात प्रथम दृष्टया एक गंभीर गलती है। क्यों? क्योंकि भ्रूण का गर्भपात करके हम एक जीव को उसके बहुमूल्य भविष्य से वंचित कर रहे हैं। लेकिन यह सवाल अभी भी खुला है कि क्या एक महिला का अपने शरीर पर नियंत्रण रखने का अधिकार गर्भपात की गंभीर नैतिक गलती के बारे में चिंता से अधिक है।

हम इस पर अलग से चर्चा कर सकते हैं। तो, यह वास्तव में उनके तर्क से अप्रासंगिक है। तो, यह मार्किस का तर्क है।

अब अलेक्जेंडर प्राउस्ट के तर्क पर चलते हैं, जो इस बुनियादी बिंदु से शुरू होता है जिसे हम सभी जानते हैं कि मैं कभी भ्रूण था। आप भी कभी भ्रूण थे। हम में से हर कोई कभी भ्रूण था।

और इस साधारण बिंदु से हम बहुत कुछ निष्कर्ष निकाल सकते हैं जो गर्भपात की बहस के लिए प्रासंगिक है। यहाँ प्रूस्ट का तर्क है। मैं एक बार एक भ्रूण था, और अगर मुझे अब मारना गलत है, तो मुझे भ्रूण के रूप में मारना भी गलत होता।

और यह बात हर जगह सभी लोगों पर लागू होती है। इसलिए, जब एक ही परिस्थिति में एक वयस्क को मारना गलत है, तो भ्रूण को मारना भी गलत है। एक भ्रूण को भी वयस्क के समान सम्मान मिलना चाहिए।

इसलिए, अगर आप मुझे अभी मारते हैं, तो आप उसी जीव को मार रहे होंगे जिसे आप तब मारते अगर आपने मुझे भ्रूण के रूप में गर्भपात करा दिया होता। हम एक ही जीव में एक हैं। और उन्होंने इस विचार की खोज में कुछ समय बिताया कि मैं कभी भ्रूण था, कि आप भी कभी भ्रूण थे।

इसका क्या सबूत है? उन्होंने बताया कि मेरे जन्म से नौ महीने पहले मेरी माँ ने जिस जीव को जन्म दिया था, वह मेरे मामले में अक्टूबर 1962 के क्यूबा मिसाइल संकट के दौरान था। मुझे लगता है कि मेरे माता-पिता ने सावधानी बरतते हुए सोचा कि परमाणु युद्ध होने वाला है और दुनिया खत्म होने वाली है। और इसलिए मैं नौ महीने बाद इस दुनिया में आया।

तो शायद मुझे ख्रुशेव और फिदेल कास्त्रो जैसे लोगों का शुक्रगुजार होना चाहिए। लेकिन आगे बढ़ते हुए, मेरी माँ ने मेरे जन्म से नौ महीने पहले जो जीव गर्भ में धारण किया था, वह कभी नहीं मरा। यह सिर्फ मेरा हिस्सा नहीं है बल्कि मेरे साथ निरंतर बना हुआ है।

तो, मैं उस भ्रूण के समान ही एक जीव हूँ। यह बहुत अलग दिखता है। लेकिन भौतिक रूप के संदर्भ में हमारे अंतर के बावजूद, मैं उस जीव के साथ निरंतर हूँ।

इस संभावित समस्या के बारे में क्या? जुड़वाँ होने की आपत्ति। क्या यह तथ्य कि कुछ ब्लास्टोसिस्ट जुड़वाँ बच्चों में विभाजित हो जाते हैं, प्राउस्ट के तर्क को कमज़ोर करता है? मेरे दो भतीजे हैं जो अब 20 के दशक की शुरुआत में हैं, जेक और जोश, जो किसी समय एक ही ब्लास्टोसिस्ट थे। और अब वे दो लोग हैं।

तो हम इस ब्लास्टोसिस्ट के हिस्से पर एक मूल्यवान भविष्य को कैसे समझ सकते हैं, जो कि एक समय में दोनों के समान था? और क्या यह किसी तरह से प्राउस्ट के तर्क को बाधित नहीं करता है? इससे निपटने का उनका तरीका यह है कि भविष्य में किसी जीव के विभाजित होने की संभावना मात्र है, उन्होंने कहा कि यह हर 260 ब्लास्टोसिस्ट में से एक है। इसका मतलब यह नहीं है कि यह एक वास्तविक व्यक्तिगत जीव नहीं है। वह इस बात के प्रमाण के बारे में बात करते हैं कि मुझे भ्रूण के रूप में मारना नैतिक रूप से गलत होगा।

फिर से, मैं वही जीव हूँ जो मैं भ्रूण के रूप में था, हालाँकि उस समय मेरे पास बहुत लंबा संभावित भविष्य था। लेकिन अगर आपने मुझे भ्रूण के रूप में मार दिया होता, तो पीड़ित वही होता जो अगर आप मुझे अभी मारते हैं। दोनों ही मामलों में पीड़ित मैं ही होता।

और इसके अलावा, इसलिए, उस भ्रूण को मारना नैतिक रूप से उतना ही गलत है, जितना कि, अगर उससे भी बुरा नहीं है, तो मुझे मार देना। क्यों? क्योंकि उस भ्रूण का भविष्य मेरे 50 के दशक के भविष्य से कहीं ज़्यादा कीमती था। भले ही मैं अपनी माँ की तरह 90 के दशक तक बहुत लंबा जीवन जीऊँ, फिर भी यह केवल 35 या 40 साल ही होगा।

लेकिन जब मैं भ्रूण था, तो मेरे सामने संभावित रूप से उससे कहीं ज़्यादा मूल्यवान भविष्य था। इसलिए, अगर मुझे भ्रूण के रूप में मार दिया जाता, तो आप मुझसे कहीं ज़्यादा मूल्यवान अनुभव और प्रोजेक्ट छीन लेते। तो अगला, यह सबूत है कि इसी कारण से किसी भी भ्रूण को मारना गलत है।

उनका कहना है कि मेरा मामला किसी और से अलग नहीं है। हम में से हर कोई कभी न कभी भ्रूण था। इसलिए, भ्रूण के रूप में किसी को मारना उतना ही गलत है जितना कि अगर आपने मुझे भ्रूण के रूप में मार दिया होता।

तो, प्राउस्ट के तर्क पर आपत्तियों के संदर्भ में, यह एक है। उन मामलों के बारे में क्या जहाँ एक माँ का जीवन खतरे में है या जहाँ भ्रूण अस्वस्थ है? उनका जवाब है कि उन मामलों से उसी तरह निपटा जाना चाहिए जैसे किसी पूर्ण विकसित वयस्क के साथ निपटा जाता है। अगर हम यह मान लें कि उस भ्रूण के मामले में उतना ही मूल्य है जितना एक वयस्क इंसान के लिए है, तो निर्णय उसी के अनुसार किए जा सकते हैं।

एक और आपत्ति यह है कि यह तर्क, जिसे कभी-कभी प्रक्षेप पथ तर्क कहा जाता है, यह स्थापित करने में विफल रहता है कि एक भ्रूण जो कभी व्यक्ति नहीं बनता है, उसके पास एक भ्रूण के समान अधिकार हैं जो एक व्यक्ति बन जाता है। डॉन बर्किच नाम के एक व्यक्ति ने यह तर्क दिया है। कोई और, प्राउस्ट नहीं, बल्कि डैनियल प्रॉपसन नाम का एक व्यक्ति, इस तर्क, इस आपत्ति

का जवाब प्राउस्ट के बचाव में यह कहते हुए देता है कि यह आपत्ति विफल हो जाती है क्योंकि यह एक भ्रूण को गर्भपात करने का कार्य है, जो खुद उसे एक व्यक्ति बनने से रोकता है।

तो, ये प्राउस्ट के तर्क पर कुछ आपत्तियाँ हैं, और इनमें से प्रत्येक पर कोई कैसे प्रतिक्रिया दे सकता है। प्राउस्ट का तर्क एक आकर्षक तर्क है, जितना सरल और गैर-तकनीकी है। वास्तव में, प्राउस्ट और मार्किस दोनों के तर्क सराहनीय रूप से स्पष्ट और गैर-तकनीकी हैं।

तो, फ्रैंक बेकविथ एक बेहतरीन ईसाई दार्शनिक हैं जिन्होंने गर्भपात की बहस और कई अन्य नैतिक मुद्दों पर बहुत कुछ प्रकाशित किया है। उनके पास प्रो-चाँइस तर्कों के लिए कुछ अच्छे जवाब भी हैं। उनमें से एक यह है कि गर्भपात बच्चे के जन्म से ज़्यादा सुरक्षित है।

कुछ लोग यह तर्क देते हैं और बताते हैं कि जब आप पहली तिमाही के गर्भपात की बात करते हैं तो मृत्यु दर 100,000 में 1 होती है, जबकि प्रसव के मामले में मृत्यु दर 100,000 में 1 होती है। हम माँ की मृत्यु दर के बारे में बात कर रहे हैं। प्रसव के मामले में यह 100,000 में 9 है।

बहुत से लोग यह तर्क देंगे कि गर्भपात बच्चे के जन्म से 9 गुना ज़्यादा सुरक्षित है। तो, क्या यह उस महिला के लिए गर्भपात के पक्ष में एक तरह की सिफ़ारिश नहीं है जो निर्णय लेने की कोशिश कर रही है? बेकविथ ने कहा कि यह बेहद भ्रामक है। जब आप इस तरह के आँकड़ों को देखते हैं और गर्भपात के 9 गुना ज़्यादा सुरक्षित होने की बात करते हैं, तो यह प्रभावशाली लग सकता है।

लेकिन सच तो यह है कि अगर हम संख्याओं को दूसरे तरीके से देखें, तो हम पाएंगे कि यह कितना भ्रामक है। क्योंकि अंतर वास्तव में सांख्यिकीय रूप से महत्वहीन है। महिला के लिए गर्भपात की उत्तरजीविता दर 99.999% है। लेकिन प्रसव में, यह 99.991% है। अंतर .008% है, जो नगण्य है।

इसलिए, इस पर किसी भी तरह की प्रो-चाँइस स्थिति का निर्माण करना समस्याग्रस्त है। फिर बेकविथ ने आगे कहा कि भले ही बच्चे के जन्म में कोई महत्वपूर्ण खतरा हो, जैसा कि उन्होंने कहा, किसी व्यक्ति का अपनी संतान के प्रति जो विशेष नैतिक दायित्व है, वह उस सापेक्ष खतरे से कहीं अधिक है जिसे वह उस नैतिक दायित्व पर काम न करके टालता है। इसलिए भले ही संख्याएँ 19वीं शताब्दी की तरह ही हों, जिसमें जन्म देने वाली महिलाओं के लिए मृत्यु दर बहुत अधिक थी, केवल यह तथ्य कि आपका अपनी संतान के प्रति विशेष दायित्व है, उस खतरे के विचार को कम कर देता है।

अब, बेकविथ जूडिथ जार्विस थॉम्पसन के वायलिन वादक के उदाहरण का भी जवाब देते हैं, जिसके बारे में हमने बात की थी। इस बारे में उनके पास कहने के लिए कई बातें हैं। एक यह है कि थॉम्पसन मानते हैं कि किसी व्यक्ति के अपने बच्चों के प्रति सभी कर्तव्य स्वैच्छिक होने चाहिए।

ऐसा लगता है कि वह कम से कम मौन रूप से इस विचार को अस्वीकार करती है कि आप स्वाभाविक रूप से अपने बच्चों के प्रति कर्तव्य और दायित्व रखते हैं, क्योंकि वे आपके बच्चे हैं।

हम निश्चित रूप से किसी पुरुष के अपने बच्चों के प्रति कर्तव्यों की अवहेलना नहीं करते हैं, सिर्फ इसलिए कि उसने अनजाने में किसी महिला को गर्भवती कर दिया। और यह कि उसने उस दायित्व को नहीं चुना।

यह ऐसा है, दोस्त, यह आपका दायित्व है क्योंकि यह आपका बच्चा है। भले ही आप इसे नहीं चाहते थे, आपने इसे नहीं चुना, और आपने इसका इरादा नहीं किया, फिर भी यह आपका दायित्व है। और यही बात गर्भवती माँ पर भी लागू होती है।

स्वैच्छिकता का यह विचार, स्वैच्छिकता के दायित्वों का विचार, बेकविथ के अनुसार, पारिवारिक नैतिकता के लिए घातक है। यह इस धारणा को कमजोर करता है कि हमारे परिवार के प्रति हमारे विशेष दायित्व हैं, सिर्फ इसलिए कि वे हमारे परिवार हैं, खासकर हमारी संतानें। आपकी माँ या आपके पिता या आपके भाई या आपकी बहन के प्रति आपके विशेष दायित्व हैं, सिर्फ इसलिए कि वे आपके परिवार के सदस्य हैं।

और ऐसा ही आपके बच्चों के लिए भी होता है। बल्कि, इससे भी ज़्यादा। उन्होंने थॉम्पसन के वायलिन वादक सादृश्य में वायलिन वादक और अजन्मे बच्चे के बीच एक महत्वपूर्ण असमानता को नोट किया है।

एक, वायलिन वादक के विपरीत, अजन्मे बच्चे स्वाभाविक रूप से माँ पर निर्भर होते हैं। वायलिन वादक केवल उस सादृश्य में बहुत ही कृत्रिम तरीके से आप पर निर्भर हो गया। उन्हें आपको बेहोश करना पड़ा और फिर आपको इस वायलिन वादक से जोड़ना पड़ा और उस निर्भरता को बनाने के लिए आपके बीच रक्त प्रवाह बनाना पड़ा।

लेकिन यह पूरी तरह से कृत्रिम है, अजन्मे बच्चे की माँ पर स्वाभाविक निर्भरता के विपरीत। इसलिए, बेकविथ का तर्क है कि अजन्मे बच्चे की तुलना कृत्रिम रूप से जुड़े अजनबी से करना, माँ और उसके बच्चे के बीच के प्राकृतिक बंधन को कमजोर करता है।

तो, मुझे लगता है कि बेकविथ की ओर से थॉम्पसन के तर्क के लिए ये कुछ बहुत ही अच्छे जवाब हैं। ठीक है, तो चलिए अब प्रो-लाइफ़ दृष्टिकोण के लिए बाइबिल के मामले पर चलते हैं। यहाँ कुछ बाइबिल के अंश दिए गए हैं जिन्हें अक्सर गर्भपात के सवाल के लिए प्रासंगिक बताया जाता है।

उनमें से एक भजन 139, श्लोक 13 से 16 में आता है, जो इस तथ्य पर प्रकाश डालता है कि अजन्मे बच्चे परमेश्वर द्वारा बनाए गए हैं और उन्हें वह बहुत करीब से जानते हैं। इसलिए, भजनकार कहता है, क्योंकि तूने मेरे अंतरतम को रचा है, तूने मुझे मेरी माँ के गर्भ में रचा है। जब मैं गुप्त स्थान में बनाया गया था, तब मेरा ढाँचा तुझसे छिपा नहीं था।

जब मैं धरती की गहराई में बुना गया था, तब तुम्हारी आँखों ने मेरे असंरचित शरीर को देखा था। इसलिए, यहाँ भजनकार के अनुसार, परमेश्वर प्रत्येक मनुष्य के निर्माण में उसकी माँ के गर्भ में बहुत ही घनिष्ठ रूप से शामिल है। यह एक सावधानीपूर्वक विधान है।

इसलिए भले ही, मेरे मामले में, मेरे माता-पिता मेरे गर्भाधान के बारे में बिल्कुल अनजान थे, और उन्होंने मुझे बताया कि मैं एक असफल शुक्राणुनाशक, एक असफल गर्भनिरोधक का परिणाम था, भगवान पूरी तरह से जागरूक थे और मेरी माँ के गर्भ में अर्धसूत्रीविभाजन की प्रक्रिया में मुझे जानबूझकर बुन रहे थे। भगवान उसमें सक्रिय रूप से शामिल थे। इसलिए, मेरे मामले में और अन्य सभी में, अजन्मे बच्चे भगवान द्वारा बनाए गए हैं, उन्हें वे अच्छी तरह से जानते हैं।

भजनकार सिर्फ अपने मामले के बारे में नहीं बल्कि सभी मानवीय अवधारणाओं के बारे में बात कर रहा है। यिर्मयाह 1 में भी हम इसी तरह की बात पाते हैं। वह कहता है, गर्भ में रचने से पहले ही मैं तुम्हें जानता था।

तुम्हारे जन्म से पहले ही मैंने तुम्हें अलग कर दिया था। मैंने तुम्हें राष्ट्रों के लिए एक भविष्यद्वक्ता के रूप में नियुक्त किया था। इसलिए, परमेश्वर ने यिर्मयाह के जन्म से पहले ही उसके लिए बहुत ही जानबूझकर योजनाएँ बना ली थीं।

और ऐसा ही हममें से बाकी लोगों के लिए भी है। एक और बाइबिल तर्क जो अक्सर दिया जाता है, वह इस तथ्य की अपील है कि कुछ मामलों में अजन्मे शिशुओं को बच्चे कहा जाता है, जैसे कि ल्यूक 1 में, जहाँ यीशु की माँ और जॉन बैपटिस्ट की माँ मिलती हैं। और जॉन बैपटिस्ट की माँ ने बताया कि बच्चा उसके गर्भ में उछल पड़ा।

निर्गमन 21 वास्तव में एक दिलचस्प अंश है। यह पेंटाटेच में इन केस स्टडीज़ में से एक है, जिसमें कहा गया है कि अगर लड़ने वाले पुरुष किसी गर्भवती महिला को मारते हैं और वह समय से पहले बच्चे को जन्म देती है, लेकिन कोई गंभीर चोट नहीं लगती है, तो अपराधी पर जुर्माना लगाया जाना चाहिए। और यह आगे बताता है कि अगर कोई और चोट लगती है, तो सजा आंख के बदले आंख, जान के बदले जान, इत्यादि होनी चाहिए।

दुर्भाग्यवश, इस अंश का अनुवाद कुछ बाइबल अनुवादों में गर्भपात के रूप में किया गया है। येलादेहा, जो कि वहाँ का मुख्य हिब्रू वाक्यांश है, इसका मतलब है कि उसका बच्चा बाहर आ गया है। और इस बात का कोई संकेत नहीं है कि समय से पहले बाहर आने वाला बच्चा जीवित रहता है या मर जाता है।

इसलिए, अगर इसका सही अनुवाद समय से पहले जन्म देना या बच्चे का बाहर आना है, तो कोई भी अन्य चोट उस बच्चे पर लागू होगी। इसलिए, अगर बच्चा मर जाता है, तो यह बच्चे पर लागू होने वाले जीवन के लिए जीवन बन जाता है। और अचानक, यह एक बहुत मजबूत जीवन समर्थक मार्ग बन जाता है, जैसा कि यह है।

लेकिन अगर इसका गलत तरीके से गर्भपात के रूप में अनुवाद किया जाता है, तो वास्तव में, यह एक तरह का प्रो-चॉइस तर्क बन जाता है। इसलिए, अगर उस हिब्रू वाक्यांश के उचित अनुवाद के बारे में उस अंश में इतना कुछ बदल जाता है, तो उसका बच्चा बाहर आ जाता है, येल्लु और फिर जीवन समर्थक दृष्टिकोण के लिए एक तीसरा तर्क इस तथ्य की अपील करता है कि कई मामलों में अजन्मे बच्चे को जन्म से पहले भगवान द्वारा बुलाया जाता है।

हमने पहले ही उत्पत्ति 1 के अंश को देखा है, लेकिन गलातियों 1, यशायाह 49, न्यायियों 13, उत्पत्ति 25 में भी। इनमें से प्रत्येक मामले में, आप पाते हैं कि परमेश्वर लोगों को उनके जन्म से पहले बुलाता है। अंत में, आइए हम कई बहुत ही सामान्य समर्थक-विकल्प तर्कों पर एक साथ ध्यान दें।

आप उन्हें समाचार कार्यक्रमों में या गर्भपात के मुद्दे पर सार्वजनिक चर्चाओं में सुनते हैं। उनमें से एक यह है कि एक महिला को अपने शरीर के साथ अपनी पसंद के अनुसार व्यवहार करने का अधिकार है। यह एक बहुत ही आम तर्क है।

अगर गर्भपात अवैध हो जाता है, तो हम फिर से गुप्त गर्भपात प्रदाताओं के दिनों में लौट जाएंगे। मुझे याद है कि सीनेटर टेड कैनेडी ने 1980 के दशक में सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश पद के लिए नामित व्यक्ति की समीक्षा के दौरान यह तर्क दिया था। उन्होंने कहा, अगर इस व्यक्ति को सुप्रीम कोर्ट में बैठने की अनुमति दी जाती है, तो हम गुप्त गर्भपात प्रदाताओं के दौर में वापस चले जाएंगे।

और यह तर्क अभी भी दिया जाता है। कि गर्भपात को अवैध बनाने से कुछ महिलाओं के लिए आर्थिक मुश्किलें पैदा होंगी। आप अक्सर यह तर्क सुनते हैं।

और समाज को महिलाओं को अवांछित या विकलांग बच्चों को दुनिया में लाने के लिए मजबूर नहीं करना चाहिए। यह एक और तर्क है। तो, इन सभी तर्कों में जो बात आम है वह यह है कि उनमें से प्रत्येक प्रश्न को टालने की भ्रंति करता है।

स्कॉट रे, जिन्होंने नैतिक विकल्प नामक पुस्तक लिखी है, गर्भपात पर अपने अध्याय में इस बात के साथ-साथ कई अन्य अच्छे बिंदु भी बताते हैं। इनमें से प्रत्येक तर्क यह मानता है कि भ्रूण एक व्यक्ति नहीं है और उसके पास कोई नैतिक अधिकार नहीं है। क्योंकि अगर भ्रूण एक व्यक्ति है और उसके पास वे सभी नैतिक अधिकार हैं जो आपके या मेरे पास हैं, तो यह कहना कि एक महिला को अपने शरीर के साथ जो चाहे करने का अधिकार है, अप्रासंगिक है क्योंकि भ्रूण केवल उसके अपने शरीर का एक हिस्सा नहीं है, बल्कि एक अलग मानव व्यक्ति है।

और इसी तरह यह गर्भपात, महिलाओं के लिए वित्तीय कठिनाइयों या अनचाहे बच्चों के बारे में चिंताओं के साथ भी जुड़ा हुआ है। यह सब अप्रासंगिक है क्योंकि हम एक अलग, विशिष्ट मानव व्यक्ति के बारे में बात कर रहे हैं जिसके अपने अधिकार हैं। तो, गर्भपात की बहस पर हमारा नज़रिया यहीं समाप्त होता है।

यह डॉ. जेम्स एस. स्पीगल द्वारा ईसाई नैतिकता पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 11, गर्भपात, भाग 2 है।